उपसंहार

उपसंहार

पत्रकारिता एक ऐसी शक्ति है, जो सामाजिक विकृतियों को दूर करके जनमानस में मंगलकारी सुधारों और निर्माणकारी तत्वों एवं मूल्यां की प्रतिष्ठा करती है। पत्रकारिता केवल समाचारों को इकट्ठा नहीं करती ब्लकि वह मनुष्य और मनुष्य के बीच का सम्प्रेष्ण सामयिकता और अतिहास को सम्पूर्ण गति से जोड़ने का प्रयास है।

समाज के बाहरी विवरण के साथ–साथ उसके आन्तरिक अर्थ को जन–जन तक पहुँचाने का प्रयास है और बनते हुए इतिहास को मावनीय मूल्य–मर्यादा की ओर मोड़ते रहने का अनवरत साधन है। पत्रकारिता समय के साथ समाज की दिग्दर्शिका और नियामिका है।

पत्रकारिता समाज की एक प्रभावशाली संस्था है। इसके बिना समाज की गति थम सी जाती है। पत्रकारिता सामाजिक चेतना का आदर्श है वस्तुतः प्रत्येक मानव अपने समाज से अधिक प्राप्त करना चाहता है और उसी से अपने जीवन मूल्यों से परिचित होता है।

राष्ट्र अथवा समाज में व्याप्त असन्तोष, आक्रोश या विद्रोह का नियमन करके पत्रकारिता समाज को दिशा देती है और मूल्यहीन समाज को नव–जीवन देती है। मनवीय मूल्य मनुष्य के सामाजिक संबंधो का द्योतक या प्रतिरूपक है। पत्रकारिता मानवीय मूल्यों को शाश्वत प्रदान कर शेष मूल्यों को परिवर्तित रूप में ग्राह्य, नियेत्रित उवं लोक–मंगलकारी बनाती है।आज

के युग में आधुनीकीकरण के कारण समाज मूल्यहीन हो रहा है। समाज को विघटित जीवन मूल्यों के स्थान में नए मूल्यों की स्थापना करने का कार्य आज पत्रकारिता के द्वारा संभव है।

सामाजिक, आर्थिक, राजनीमिक तथा सांस्कृतिक जीवन की सास्याओं को पत्रकारिता दूर करने का काम करती हैं। पत्रकारिता का समाज में विशेष महत्व है, यह एक ऐसा साधन है जो सभी वर्गों पर प्रभावी कार्य करता है। बच्चा, बूढ़ा, युवा, नारी कोई भी हो हर व्यक्ति पर अपना प्रभाव जमाता हैं।

यह जो जीवन मूल्य होते है वह व्यक्ति की उन्नति तथा समाज की व्यवस्था एवं प्रगति के लिए स्थापित की जाती है। मानव जीवन में पाई जाने वाले कुछ आध्यात्मिक मूल्य इस प्रकार हैं जो समाज एवं प्रत्येक व्यक्ति का चरित्र निर्माण करता है। धैर्य, क्षमा, अस्तेय, इन्द्रिय–निग्रह, विद्या, आक्रोष और मन की एकाग्रत।

अतः स्वाभाविक है कि पत्रकारिता मनुष्य को कर्मशील बनाने की चेष्टा करती है। पत्रकारिता सामाजिक जीवन की वह सीढ़ी है जो समाज को सच–झुठ, शुभ–अशुभ और अच्छे–बुरे के दरवाजे तक पहुँचाती है। पत्रकारिता आज के समाज का एक ऐसा अनिवार्य तत्व है, जो मानवीय संबंधो को जगाने तथा मानवीय मूल्यों का पोषण एवं पल्लवन करने का पूर्ण दात्वि निभाती है।

"मानवीय मूल्य पत्रकारिता की सच्ची परिचायिका और प्रेरक है।" हम मानव है, मानवीयता हमारा लक्ष्य; अगर हम इसका निर्वाह नहीं कर पाए तो मनुष्य और निशचर में अंतर खत्म हो जाएग और धरती पर नरक का आगमन हो जाएगा। हम है तो जहाँ है। एक दूसरे के प्रति आदर, चाह, ममत्व, श्रद्धा, अपनत्व, सभी को एक सूत्र में बाँधने का कार्य पत्रकारिता द्वारा ही संभव है।